मनुष्य बनो

انسان بنو

मानवता के मुख्य नियम

संस्थापक

क्षक

याल फकीर चन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदंः पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २६	क्वार सं० २०३३ वि० सितम्बर १९७६	संख्या १२

चेतावनी

कोई सुख दुख का नहीं, दाता तेरी है भूल सब ।
कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब ॥१॥
कर्म की प्रधानता की; क्या नहीं तुझको समझ ।
कर्म से आनन्द है, अरु कर्म ही है शूल सब ॥२॥
यह जगत है वाटिका, करते हैं प्राणी आके काम ।
कर्म के अनुसार इनके, कांटे हैं और फूल सब ॥३॥
जो ठगेगा वह ठगा जायेगा, निस्सन्देह आप ।
प्रेमी जन पाते हैं और, यह प्रेम के बहु मूल सब ॥४॥
अपनी करनी आप भरनी, पड़ती है संसार में ।
अपने घर की आप उठाया, करते ही हैं चूल सब ॥५॥
किस भरम में तू पड़ा, औरों की बातें छोड़ दे ।
काम में लग अपने करले, कर्म निज अनुकूल सब ॥६॥
राधास्वामी नाम भज, झगड़ों से बचकर रह सदा ।
जो नहीं समझा तो. पढ़ना लिखना होगा धूल सब ॥७॥

सम्पादकीय—

वे दिन

कैसे थे वे दिन ! राजनैतिक उग्रपंथियों ने, तथा अन्य असमाजिक तत्वों ने देश में जनता की नाक में दम कर दिया था। उपद्रवी व उत्तेजित छात्र वर्ग हर समय विध्वंस के लिये तत्पर रहता था। विश्व विद्यालय राजनीति का अखाड़ा बनी हुई थी। साम्प्रदायिक दंगो में जनता त्रसित रही निर्दोष लोग मारे जा रहे थे। खाने की चीजों तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं का कृत्रिम अभाव बना कर जनता को मनमाने ढंग से चूसा जारहा था। तस्करी का बोलवाला था। विदेशी सामान से बाजार भरा हुआ था यद्यपि बिना परमिट के कोई चीज सम्भव नहीं थी।

हड़ताल, तालाबन्दी, मुजायरे, जलसे, अर्थी जलाना एक साधारण बात थी। अजीब किस्म के नारेबाजी से देश का कोना-कोना भरा हुआ था।

काला धन सुरसा की तरह अपने पैर जमा चुका था। जिसकी छाया में मुठ्ठी भर लोग विलासिता की नदी में गोता लगा रहे थे। साधारण लोग एक वक्त रोटी के लिये भी त्राहि त्राहि करने लगे थे।

राजनैतिक जीवन में हा हा कार व उथल मच गया था जन निर्वाचित शासन-संस्था को पंगु बनाया जारहा था। चारों ओर अनिश्चितता का वातावरण पैदा होगया था। सभी के सामने यही प्रश्न था कि अब क्या होगा। देश का क्या होगा। हमारा भविष्य क्या होगा। इस अराजकता का अन्त कहाँ होगा। मगर इस सवाल का जवाब किसी के भी पास नहीं था।

अनुशासन हीनता, तोड़-फोड़, हिंसा, डकैती, राहजनी, लापरवाही, कर्तव्य विमुखता, कामचोरी, निराशा, घूँस, मिलावट, एक अंग बन गई थी।

किन्तु संसार में कुछ ऐसे महापुरुष होते हैं जो इतिहास धारा को वड़ी तेजी के साथ अनुकूल दिशा में मोड़ देते है। उनकी विलक्षणता समाज में नई चेतना पैदा कर देती है। ऐसे महापुरुषों को "युग परिवर्तक" की संज्ञा दी जाती है।

भारतवर्ष में ऐसे महापुरुष समय समय पर पैदा होते ही रहते हैं।

आज देश में एक चमत्कार का अनुभव आप स्वयं कर रहे हैं। यह सब कैसे सम्भव होगया। कौन वह युगान्तरकारी शक्ति जिसने देश को अनुकूल दशा देदी है। जिसने एक ही झटके में एक अनिश्चत वातावरण को समाप्त कर एक नया अध्याय शुरू कर दिया है।

अभी तो मुश्किल से एक ही वर्ष हुआ। देश को २० सूत्री कार्य-क्रम देकर एक स्थाई प्रगति की ओर बढ़ा दिया है। एक ही झटके में जितनी अड़चनें देश के सामने मौजूद थीं वह काफूर होगई हैं। हिंसा, उपद्रव, अनुशासनहीनता आदि सारे अवगुण मानो लुप्त होगये और देश में अनुशासन, नव निर्वाण, शान्ति शीलता, इमान-दारी और आशापूर्ण अब जन जन में दृष्टिगोचर होने लगे हैं। जन-साधारण में अपने प्रयत्न से जो कुछ गंदगी रही भी थी उसे अलग कर दिया है।

मात्र एक वर्ष के अल्पकाल में देशने जो हासिल किया है इसका प्रमाण जन जन के सम्मुख प्रस्तुत है। वास्तव में यह एक वर्ष "उपलब्धियों का वर्ष" रहा है।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्द्रागाँधी के शब्दों में "इतिहास को बद-लने के लिये संघर्ष करना होता है। आराम नहीं, देश की उनमें अदम्य साहस संघर्ष शीलता का गुण, देश भक्ति की भावना ओत-प्रोत नजर आती है।

राष्ट्र ने आज असलीपन को समझ लिया है। विनाश बिषय के मार्ग को त्याग कर शाँति व समृद्धि की ओर प्रगति का मार्ग चुन

लिया है। राष्ट्रीय जीवन में नया तेज, नया ओज भर गया है। अनुशासन व जन सहयोग की भावना चारों ओर प्रत्यक्ष दिखाई दे रही है। जिसकी पहले कभी भी कल्पना नहीं की जासकती थी।

मुद्रास्फति रुक गई है, मूल्यों में स्थिरता आई है। खाद्यान्नों की उपलब्धी संतोषजनक होगई है। राष्ट्रीय आय बढ़ रही है। निर्यात सरकारी क्षेत्र के उद्योगों में उन्नति से देश में आत्मविश्वास जागा है।

समस्त देश में स्थिरता, शान्ति, परस्पर सहयोग का भाव दिखाई दे रहा है। पथ भ्रष्ट करने वाले तत्व धाराशाही होगये हैं।

देश प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दरा गांधी को इस साहसिक काम के लिये बधाई देता है।

चन्दा निम्न पते पर भेजें

सभी ग्राहक बन्धुओं से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक चन्दा नीचे लिखे पते पर ही भेजें एवं अपना ग्राहक नं० अवश्य लिखें तकि चन्दा सही सही दर्ज किया जा सके।

व्यवस्थापक एवं प्रकाशक

श्रीमती सुधा मीतल

शिव भवन, लेखराज नगर

अलीगढ़।

धन्यबाद

भाई करनेलसिंह फीरोजपुर कैंट ने अपने पुत्र के जन्म दिन समारोह उपलक्ष में ५१) रु० "मनुष्य बनो" के सहायतार्थ भेजे हैं। हमारी हार्दिक भावना है कि मलिक बच्चे की चिरआयु करे एवं उनका कल्याण करे।

प्रकाशक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

कथा कीर्तन की महिमा

(ले०—शिवव्रतलाल जी महाराज)

जो लोग अपना समय कथा कीर्तन में व्यतीत करते हैं वे धन्य हैं। क्योंकि वे संसारी भवसागर से आप तरते हैं और दूसरों को भी तारते रहते हैं। जो केवल अपने स्वार्थ वश कोई काम करते हैं उनको सफलता पूर्ण रूप में प्राप्त नहीं होती, क्योंकि प्रकृति के अटल नियम में स्वार्थ का प्रश्न कहीं और किसी अवस्था में नहीं आता। सब एक दूसरे के साथ गुथे हुए हैं। सब अपने-अपने अस्तित्व और व्यक्तिगत रूप में एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं। आंख हैं, कान हैं, हाथ-पांव सब हैं, सब अलग-अलग भी हैं। सब मिले जुले हैं। और कौन सा काम है जिसमें सबका सहयोग नहीं होता, यदि सब के सब शरीक न हों तो कुछ काम न कर सकेंगे। न काम करने का फल किसी को प्राप्त होगा। शरीर के किसी एक अंग को लेलो। जैसे खाना खाने की बात है। हाथ ग्रास उठाता है। नाक सूंघती है। आंख देखती है। होंठ खुलते हैं। जिभ्या स्वाद लेती है। दांत चबाते हैं। कंठ नीचे उतारता है। नाभी की वायु उसको पचाती है। जठराग्नि हज़म करती है। अन्दर की नस नाड़ियां ऐडी से चोटी तक सब उसके सहायक बने हुए हैं। और सारा शरीर खा पीकर स्वस्थ बना रहता है। देखो एक काम है और सब उसमें लगे हुए हैं, इनमें कौन ऐसा है जो शरीक नहीं है। यदि कोई स्वार्थ सिद्धि के उलझन में आकर इस संगठन को हानि पहुँचाना चाहता है तो प्रकृति में उसके लिये क्षमा नहीं है। वह पापी है, मुजरिम है, गुनहगार है। और उसके सुधार के लिए काल भगवान का त्रशूल और माया का चक्र सदैव घूमता रहता है। धर्म और पंथ का ध्येय या इष्ट यह है कि सबको लाभ पहुंचे सबके चित से दुई का ख्याल

दूर हो। सब प्रेम और भक्ति के मार्ग में अपने आपको भूलें। एक ख्याल रहे, एक प्रयोजन, एक इक्षा, एक आस, एक विश्वास और यह ही मुक्ति का स्वरूप है। जो इस अवस्था और ध्येय को प्राप्त कर लेता है वही मालिक का सच्चा सेवक और सच्चा भक्त है। जिसमें दुई है, द्वैत भाव है स्वार्थ है वह मालिक का कभी नहीं है। वह काल का खाजा है।

अध्यात्म का सच्चा पाठ यदि कहीं मिलता है तो वह कथा कीर्तन में नसीब होता है। कथा कीर्तन हो रहा है। सब एक ख्याल के धागे से बँधे हैं। सबकी वृति मालिक की ओर है। सब के भाव मालिक के चरण कमल की ओर झुके हुए हैं। किसी को चिन्ता नहीं। किसी को व्याकुलता नहीं। यह नहीं प्रतीत होता कि समय कैसे बीत गया। फिक्र किसी को नहीं सताती। समय का ध्यान और संसारी वासनाओं की चिन्ता यह काल और माया की जबरदस्त कड़ी हैं। इन जंजीरों की कड़ी यदि कहीं तड़ाक-तड़ाक टूटती हैं तो वह कथा कीर्तन है। मनुष्य कथा कीर्तन करते हुए अपने आपको भूल जाता है। संसार को भूल जाता है। और इन सब का भूलना और भुलाना मोक्ष है। मोक्ष और किसी वस्तु का नाम नहीं है।

हे मेरे प्यारे प्रीतम ! तू इस प्रकार मेरा प्यारा बन जा जैसे कामी पुरुष अपनी कामिनि को प्यार करता है। हे मेरे सच्चे मालिक ! तू मेरे चित्त में इस तरह बस जा जैसे कंगाल और लोभी मनुष्यों के हृदय में धन दौलत की इच्छा बसती है। हे मेरे स्वामी ! तू मेरा सागर हो और मैं एक मछली की भांति तुझ में बसा हुआ तेरे दर्शन का सुख अनुभव करूँ ! एक पल के लिये भी तुझसे न बिछड़ूं। मुझको अपनी छवि, सुन्दरता के दीपक का परवाना बनाले। चाहे मेरे बाल व पंख जल जायें। इसकी चिन्ता नही। पर मेरा अस्तित्व तेरी हस्ती में मिलकर एक हो जाय। मुझ में और

तुझ में भेद न रहे। हे प्राणों के प्राण जगदीश्वर! तू मेरा ! होजा। मेरी स्वांस तेरी स्वांस हो। तू मेरी आँख बनजा। मैं सबको तेरी आंखों से देखूं। तू मेरे हाथों में समाजा और तेरे बल से तेरे भक्तों की और प्राणी मात्र की सेवा करूँ। मैं आप न रहूं तू ही तू रहे। ऐसा हो कि वह मेरा अपना सब तेरे चरणों पर निछावर हो जाय; जिधर दृष्टि जाय तेरे सिवाय कुछ नज़र न आवे। जिधर ख्याल जाय सब में तू ही रमा हुआ दिखाई दे।

यह दशा कहाँ उत्पन्न होती है? कथा कीर्तन में। यह अवस्था कैसे आती है? कथा कीर्तन से। कथा सुन रहे हैं, नेत्रों से अश्रुधारा वह रही है। मन गदगद है। चित्त प्रसन्न है। कीर्तन कर रहे हैं। भगवान की स्तुति गा रहे हैं। मन आत्मा के ऊँचे मंडल में चक्कर लगा रहा है। आँख नाक कान सब अंग उसी एक विचार में लीन हैं। इस समय संसार कहाँ है? कोई बतावे तो सही? इस समय माया के दुख और संताप कहां हैं? कोई इसका रूप दिखावे तो सही। यह कथा कीर्तन की महिमा है। यह उसकी मान बड़ाई है। और मैं धन्य कहता हूं उन लोगों को जो अपने समय का कुछ भी हिस्सा कथा कीर्तन में बिताते हैं। कथा कीर्तन की बढ़ाई मैं क्या करूँ? शेष महेश शारदा और ब्रह्मा भी उसकी महिमा का वर्णन नहीं कर सकते। उसका फल उसी समय होता है। यह वह औषधि है जिसका फल तत्काल होता है, इन्तजार करने की आवश्यकता नहीं।

मज्जन फल देखिये तत्काला।
होंहि काक पिक बकहु मराला।

गुसांईजी महाराज की बाणी है। इसमें स्नान का फल तत्काल होता है। चाहे सूरत शक्ल न बदले पर स्वभाव उसी समय बदल जाता है। कौआ कोयल के समान मीठे बचन बोलने लग जाता है, बगला हंस बन कर मोती चुगने लगता है। कथा कीर्तन वह पवित्र

करने वाला सरोवर है जिसमें गोता लगाने से मन निर्मल हो जाता है और संसारी जीव पर्मात्मा के मंदिर में जाकर पूजा करने का अधिकारी बन जाता है। यह कथा कीर्तन की महिमा है।

आओ प्रेमी जनों ! गुरु कबीर साहब की वाणी कथा कीर्तन के विषय में तुमको सुनायें—

कथा कीर्तन कलि विषय भव सागर की नाव।
कहें कबीर जग तरण को नाहें और उपाय ॥
कथा कीर्तन करन की जाके निशदिन रीत।
कहें कबीर ता दास से निश्चय कीजै प्रीत ॥
कथा कीर्तन छांड़ कर करे जो और उपाय।
कहें कबीर ता साध के पास कोई मत जाय ॥
कथा कान रात दिन जाके उत्तम ऐह।
कहे कबीर ता साध की हम चरनन की खेह ॥
कथा करो करतार की निशदिन सांज सकार।
काम कथा को त्याग दो कहें कबीर विचार ॥
काम कथा सुनिये नहीं सुन कर उपजै काम।
कहें कबीर विचार कर बिसर जात है नाम ॥

वाणी सरल है। अर्थ करने से वाणी का बल घट जाता है। इसलिये जरूरत नहीं।

ओहों ! देखो कैसी सुन्दर वाणी है ! कैसा अच्छा और मनोहर उपदेश है ! कैसी सरल वाणी है ! जो हृदय के चिदाकाश में घुस कर अपना काम करती है। इससे अधिक हम कथा कीर्तन की महिमा को वर्णन नहीं कर सकते। यदि तुम इजाजत दो तो हम तुमको उन प्राणियों की कथायें सुनावें जिन्होंने सत्य की वेदी पर अपने आपको बलिदान कर दिया है। जिनके जीवन के सुहाने राग हम और तुम आज तक सुनते आते हैं। संसार में लोग सब ही मरते जीते हैं। कौन किसका नाम जानता है। पर जिन आत्माओं ने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अपने आपको मालिक के नाम पर अर्पण कर दिया आज तक उन लोगों के गीत गाये जाते हैं। राजा-रानी मर मिटे कौन उनके नाम लेते हैं। भक्त और भक्तिनियों की कथाओं में परमार्थ का रस मिलता है। और अब तक दरो दीवार से उनके नाम की धुन गूँज रही है। सच है जो दाना हजारों मन मिट्टी के नीचे दब कर अपने अस्तित्व को खो देता है उसी से सच्चा जीवन पैदा होता है। एक जीवन ही नहीं अनेक जीवन उत्पन्न हो जाते हैं। और वह ही फैल कर सारे विश्व में व्यापक हो जाता है। मालिक के प्रेमी और भक्तों की भी ऐसी ही दशा होती है। इनमें स्वार्थ नहीं होता। इनको कभी अपने निजी स्वार्थ का ख्याल नहीं। वह सारे जगत को मालिक का रूप जानते हैं। वह समस्त प्राणियों को मालिक की सन्तान समझते हैं। इनमें भेदभाव कहाँ ? और यह जीवन जो संसार में नज़र आरहा है उनके जीवन का प्रतिबिम्ब है।

सियाराम मय सब जग जानी।
करूँ प्रणाम जोर जुग पाणी॥

महाराज तुलसीदासजी का कैसा मनोहर वाक्य है।

विश्वास की महिमा की कथा

धर्म कर्म पूजा पाठ, भजन बन्दगी इन सब की जड़ विश्वास में है। सारांश तो यह है कि जिस नींव पर धर्म की ऊँची इमारत खड़ी की जाती है वह केवल विश्वास है। यदि विश्वास न हो तो कोई कार्य नहीं हो सकता। आखिर कोई मनुष्य क्यों कोई काम करे ? केवल इसलिये कि उसकी सहायता से सफलता प्राप्त करने का विश्वास है। यदि मन में विश्वास हो जाय कि ऐसा करने से सफलता या सिद्धि न होगी तो फिर उस काम में चित न लगेगा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

और न उसका भला परिणाम ही होगा। यह प्रथम वस्तु है। जिसकी दीन और दुनिया में हर समय जरूरत होती है। इसके बिना कुछ कार्य नहीं होता। न केवल हमारे काम धन्धों का मूल ही विश्वास है बल्कि सार तो यह है कि संसार का व्यवहार ही विश्वास के आसरे पर चल रहा है, विश्वास की जड़ काट दो फिर क्या रहेगा? कुछ भी नहीं। न भक्ति होगी न दान किया जायगा। न वज व्यौपार की उन्नति होगी न शासन।

इस विश्वास की अनेक शाखायें हैं। एक बालक के समान विश्वास करना। दूसरा ज्ञानी पुरुषों के समान। बालकों को किसी बात की सुध नहीं रहती क्योंकि अभी तक इन पर माया का जाल इस कदर नहीं तना गया है। जो बात कही वह ही मानली गई। उनके यहां न तर्क कुतर्क है न दलील है न हुज्जत है। किसी बड़े बूढ़े ने जिसको बालकों से प्रेम है एक बात कहदी और उसने उसको सत्य मान लिया। और उसी समय से मन के सब भावों को उसी ओर लगा दिया। क्योंकि इनका विश्वास जिधर झुकता है सर्व अंग से झुकता है। किसी प्रकार की त्रुटि नहीं होती। और न यह कोई कमजोरी ही प्रतीत करते हैं उनके मन में यह ख्याल तक नहीं आता कि जो बात उनसे कही गई है वह गलत भी हो सकती है या नहीं? इस कारण वह जिस ओर ध्यान देते हैं कुछ न कुछ कर दिखाते हैं। दूसरा विश्वास ज्ञानियों का है। यह सोच विचार कर विश्वास करते हैं। सवाल के सारे पहलू, देख कर और अच्छी तरह उनकी जांच पड़ताल करके तब निर्णय करते हैं कि यह काम होगा। इनमें कमजोरी होती है क्योंकि विश्वास बुद्धि बल के साथ रहता है। बुद्धि हर समय बदलती रहती है और इसी कारण उनके विश्वास में वह दृढ़ता और मजबूती नहीं आती जो बच्चों के विश्वास की जड़ बुद्धि में नहीं होती। आत्मा में होती है। चाहे वह किसी विषय को भले प्रकार वर्णन न कर सकें पर उनको अपने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

ऊपर पूरा पूरा विश्वास होता है और यह ही कारण है कि उ‍ कमी या त्रुटि नहीं होती कुछ अनसमझ व्यक्ति इसको अन्ध विश्वास कहते हैं। उनको अभी तक इस बात का परिचय नहीं मिला कि विश्वास का पूर्ण अंग कभी किसी के दृष्टि गोचर हो ही नहीं सकता। इसलिये बच्चों के विश्वास की क्या तुलना है, समझदारों का विश्वास भी इस अपेक्षा से अन्ध विश्वास होता है। हां वह थोड़े विवेक विचार के साथ रहता है। धार्मिक विषयों में बालकों के विश्वास की अधिक प्रशंसा है। स्वामीजी महाराज की बाणी है—

बाल रूप होय जग को पेखो ? (अर्थात विचारो)

ज्ञानियों के विश्वास की तीन किस्में बताई गई हैं। प्रमाण, अनुमान और अनुभव। इनका नाम श्रवण, मनन और निद्यासन भी है। अथवा इन तीनों साधनों द्वारा ऊपर के तीनों साधन प्राप्त होते हैं। जिस बात को सुन कर या दृष्टांत द्वारा यक़ीन हो जाय वह प्रमाण ज्ञान है। जो विवेक विचार के बाद समझ में आवे और उसमें कमी का भय न हो यह अनुमान ज्ञान है। और अनुभव अथवा निद्धासन या साक्षात्कार कर लेने से जिसका विश्वास इस तरह का हो कि वह स्वयं ही विश्वास का रूप बना हो, इसको अनुभव ज्ञान कहते हैं। बच्चों के विश्वास में इन तीनों दर्जों की व्याख्या समझाने की जरूरत ही नहीं रहती। जहां कोई बात कही गई उनका विश्वास उस पर जम गया। और खुद ब खुद ही उनके मन में विश्वास की सारी हालतें आजाती हैं। और यह ही कारण है कि उनका ख्याल झटपट स्थिर हो जाता है और जो बात कही जाती है वह उसका जल्दी ही साक्षात्कार करने लगते हैं। युवक और बड़ी आयु के मनुष्यों की यह दशा नहीं होती। यदि संयोगवश किसी को नसीब हो भी गई तो वह परमहंस गति को प्राप्त होजाते हैं। सारे साधन और अभ्यास का प्रयोजन यह है कि मनुष्य में बालकों की भांति सादगी और सच्चा विश्वास पैदा हो जाय और

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जब तक यह बात नहीं है, अध्यात्म विषय के ज्ञान की पूर्ण रूप में प्राप्ति नहीं होती। बालकों का भोला और सरल स्वभाव परमार्थ में सच्चा काम बनाने वाला होता है। इनमें अगर मगर आगा पीछा देखने का सोचने का स्वभाव नहीं होता। और जवान अथवा बूढ़ों की अपेक्षा से साक्षात्कार का दर्जा हासिल कर लेते हैं। प्रह्लाद का नारद की मामूली शिक्षा ने विष्णु का दर्शन दिला दिया। हरण्यकश्यप को समझाना बुझाना भी राह पर न लासका। क्योंकि प्रह्लाद बालक था और इसी कारण सनक सनन्दन आदि ने अपने बालपन के सरल स्वभाव को सुरक्षित रखने की भगवान से प्रार्थना की थी।

तुम किसी को क्यों अन्धविश्वासी कहते हो। अंधविश्वास कोरा निअर्थक और कपोल कल्पित शब्द है। संसार में जो कुछ तुम देख रहे हो वह केवल ख्याल और विचार का तमाशा है। जो जैसा विचार करता है वैसा हो जाता है और जो व्यक्ति जितनी दृढ़ता और विश्वास के साथ ख्याल को पक्का कर लेगा वह उतना ही जल्द ख्याल की मूर्ति बन जायगा। बात केवल इतनी है और कुछ नहीं। यदि तुम इसको तनिक भी समझ लो तो फिर आप ही आप तुम्हारे तर्क की जड़ कट जायगी।

ख्याल या विचार में एक अद्भुत शक्ति होती है। यह संसार, खुद ख्याली है। यह ख्याल ही के ताने बाने (तारपाद) से बना है जिसको तुम प्रकृति, शक्ति, लक्ष्मी, दुर्गा कहते हो वह ख्याल के सिवाय और कुछ नहीं है। प्रकृति और माद्दा (matter) वास्तव में किसी ख्याल वाले के ख्याल हैं। इसलिये तुम भी जैसा ख्याल करोगे. ख्याल करते रहोगे वैसे ही बन जाओगे और वैसे ही देखने लगोगे। इसलिए विश्वास के साथ अंध का शब्द क्यों बोला जाय।

हां बालक और बड़ों के विश्वास में भेद होता है जो तुमको दिखा दिया गया। बचपन के विश्वास को भक्ति मार्ग, प्रेम मार्ग,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

श्रद्धा मार्ग कहते हैं, वह रोता है, हँसता है, लड़ता है, झगड़ता है पर किसी हाल में उसके विश्वास में कमी नहीं आती। देखो एक बालक को उसकी माता ने मार दिया है। बच्चा रोता है। माता के कपड़े फाड़ता है। आप भी उसको मारता है, रिस भी होता है। पर क्या कोई अन्य स्त्री मिठाई या खिलोने के लालच से बालक को माता से अलग कर सकती है ? राम राम कहो ! क्योंकि वह लड़ता हुआ मारता हुआ, रोता हुआ फिर भी माता के प्रेम और सच्चे प्यार का विश्वास अपने मन में रखता है। वह इसको वर्णन नहीं कर सकता न इसकी व्याख्या ही कर सकता है कि वह ऐसा क्यों करता है। यह दृश्य तुम प्रत्यक्ष में देख रहे हो। यह तरीका सहज है, सरल है। बड़ी उम्र के लोग अधिकाँश ज्ञान मार्ग की ओर झुके रहते हैं। रुचि रखते हैं, रात दिन काट छाँट, अगर मगर, तर्क कुतर्क दलील और हुज्जत करते हुए उस सार तत्व की ओर चलते हैं। उनको अधिक परिश्रम और कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं। क्योंकि बुद्धि की राह काँटेदार है। वहाँ झाड़ और कांटे बहुत हैं। खुद अपनी सँभाल करने का विचार रहता है। भक्ति मार्ग में ईश्वर भक्तों की रक्षा करता है एक फार्सी कवि की कैसी अनुपम वाणी है जिसका यह अर्थ है—

अर्थ—तू दीवाना होजा जिससे तेरे गम को दूसरे लोग खाने लगें। पागल कोई दुख महसूस नहीं करता दूसरे लोग ही उसे देख कर दुखी होते हैं। इसके अतिरिक्त जैसे बुद्धि बढ़ती है, समझ बढ़ती है समझदार, ज्ञानी बनता है तो फिर वह गम जो दूसरे खाते थे अब खुद ही खाना पड़ता है। अथवा कष्ट भोगना पड़ता है। देखो ज्ञानी और बालक में कैसा भेद है ?

बालकों की रक्षा माता पिता और बड़े बूढ़े करते हैं। बूढ़ों के पास कोई कम फटकते हैं। बालक अभी माया की लपेट में नहीं आये। बढ़ों पर माया ने हमला कर दिया और इनको बलहीन बना

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

दिया। सब लोग उनसे अलग रहने में ही खैरियत देखते हैं। संम्भव है उनको ज्ञान ध्यान से वह एकाग्रता की अवस्था प्राप्त करके सत से मिलाप होजाय। पर राह है कठिन। कोई कुछ कह नहीं सकता ?

ज्ञान का पंथ कृपाण की धारा।
चढ़त खगेश न लागहिं पारा॥

कागभुशुण्ड जी गरुड़ जी से कहते हैं हे पक्षीराज ! ज्ञान की राह तलवार की पेनी धार है। इस पर चढ़ना कठिन है। कौन जाने कब डिग जाय। इसके पार जाना सहज नहीं है।

ज्ञान और भक्ति दोनों का रुख एक ही ध्येय की ओर है। दोनों का प्रयोजन एक हैं। प्रयोजन में भेद नहीं हैं। भेद केवल तरीके का है। एक एती मार्ग है दूसरा नेति मार्ग है। एक में हां हां करते हुए चलना है दूसरे में नहीं नहीं करते हुए चलना है। एक में मिलते मिलाते हुए खुशी से राह तै होती है। दूसरे में काट छांट करते हुए चलना होता है। एक विष्णु का मार्ग है दूसरा शिवजी का मार्ग है। विष्णु पालन पोषण करते हैं। शिवजी संहार करते है रूप बदल कर (Rcferm) करके सत का दर्शन कराते हैं। बात एक है। कहने और करने का भेद है। पर भक्ति मार्ग सहज है और ज्ञान मार्ग कठिन है। फिर भी इन दोनों की जड़ में वो चीज रहती है वह विश्वास है। बिना विश्वास के दोनों ही व्यर्थ हैं। भक्ति में ईश्वर पर विश्वास रहता है जो वास्तव में अपना ही आत्मा है। ज्ञान में अपने आत्मा पर विश्वास रहता है जो ईश्वर से भिन्न नहीं है। और जिनमें बालक की सी सादगी सहज स्वभाव हैं वह अपना काम जल्द बना लेते हैं।

नामदेव जी एक छीपी के पुत्र थे। छीपी उनको कहते हैं जो कपड़े छापने का काम करते हैं। उनके माता पिता मर गये थे।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

यतीम (बे मां बाप) बालक को नाना नानी ने गोद लेकर पाला। नाना ईश्वर भक्त था। रोज नित्य नियम से ठाकुरजी की मूर्ति की पूजा करता, भोग लगाता, प्रसन्न होकर भजन गाता। यह अभ्यास वह प्रातः ही करता था। नामदेव जी बालक थे। अबेरी तक सोये रहते थे। इस कारण नाना को पूजा पाठ करते देखने का अवसर नहीं मिला। संयोगवश एक दिन सवेरे जाग पड़े और आँख मलते हुए रोने लगे। नानी बोली बेटे रोवे मत। नाना पूजा कर रहे हैं। रिस होंगे। लड़के में भक्ति भाव संस्कार दबा पड़ा था। चुप होगया। और एक कोने में खड़ा होकर पूजा पाठ के ढंग को चुपके से देखने लगा। नाना सब की आंख बचा कर पूजा किया करता था। लड़का सब बातें पूरी तौर पर नहीं देख सका। पर इसके चित पर पूजा पाठ का संस्कार और उसकी महिमा का प्रभाव पड़ गया। जब नाना पूजा पाठ कर चुका। नामदेव ने उनसे पूछा। ठाकुरजी की पूजा करते हैं। हम को भी बताओ? हम भी पूजा करेंगे। वह बोला बेटे जब कहीं मैं चला जाऊं तब तुम ठाकुरजी को न्हला धुला कर भोग लगाना। नामदेव चुप होगया। पर उसके चित पर पूजा का भाव रोज रोज गहरा होता गया। अब वह दशा होगई कि प्रातः ही उठ कर एक किनारे खड़े होकर नाना को पूजा करते हुए देखा करते और उनके भजन और बाणी को सुना करते। विचार रोज रोज गहरा होता गया। संस्कार बढ़ता गया।

संयोगवश नाना को कहीं जाने का अवसर हुआ। उन्होंने ठाकुरजी को साथ लिया। नामदेव बोले तुम बाहर जाते हो तुम्हारे पीछे मैं ठाकुरजी की पूजा करूँगा। तुमने मुझको वचन भी दिया था। नाना बालक के सहज स्वभाव पर हँसने लगा और अपनी पूजा की पोटरी से एक बाल गोपाल की मूर्ति निकाल कर ताक पर रखदी और कहा सवेरे उठ कर तुम ठाकुरजी को न्हलाना और भोग लगाना। यह मन में अति प्रसन्न हुए, अंधा क्या चाहे? दो

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आंखें। बहुत दिन के बाद ठाकुरजी की पूजा का सुअवसर हाथ आया। नाना तो चला गया यह अपनी बनो के साथ शाम होते ही सोगये और सोते सोते ही पूजा के विचार को मन में पकाते रहे। अभी आधी रात भी न बीती थी कि आंख खुल गई। प्रेमी को नींद कहां? कहने लगे नानी चल ठाकुरजी को उतार दे। मैं पूजा करूँगा। भोग लगाऊँगा। वह बोली बेटे! अभी रात है। सो रह। प्रातः ही पूजा पाठ करना। यह चुप, पर नींद नहीं आई। कई बार रह रह कर नानी को जगाते रहे। वह बोली तेने तो आज मेरी नींद भी हराम करदी। अभी बहुत रात बाकी है जब सुबह हो पूजा करना।

अन्त में सवेरा हुआ। उन्होने नानी को जगाया। जाड़े पाले की ऋतु, ओस के पानी से स्नान किया। नानी उसके भक्ति भाव को देख देख चित्त में सिहाती जाती थी। उसने ठाकुर जी को ताक पर से उतार दिया। वह आसन मार कर बैठ गये। नानी से कहा तू जा मैं तो नाना की भाँति ही पूजा करूँगा। हां भोग के लिये थोड़ा सा दूध देजा। वह बूढ़ी मन में उसके खेल को देख कर मुस्कराती हुई गई और दूध ले आई और फिर अपने काम काज में लग गई।

उन्होंने ठाकुरजी को न्हलाया धुलाया। शरीर कपड़े से पोंछा कपड़े पहनाये, चन्दन लगाया। फूल चढ़ाये, यहां तक तो कुछ नहीं। अब भोग लगाने का समय आया। नामदेव ने दूध का कटोरा सामने रख दिया। तो अब भोग लगाओ? पर भला मूर्ति कब भोग लगाने लगी। एक घड़ी देखा दो घड़ी देखा। पर मूर्ति ने टस से मस नहीं किया। अब तो नामदेवजी चित में उदास हुए! अरे ठाकुर जी! तुम भोग क्यों नहीं लगाते? क्या दूध थोड़ा है? तुम्हारे पीने लायक तो बहुत है। तुम छोटे से तो हो! कितना दूध पीओगे? इतना पहले पीलो फिर मैं नानी से और माँग लाऊँगा। पर मूर्ति ने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

न उनकी बात सुनी और न दूध ही पीया। यह समझे कि नाराज होगई। प्रार्थना करने लगे प्रभू मैं बालक हूं तुम्हारी पूजा क्या जानूँ ? मुझ पर दया करो दूध पीलो। पर मूर्ति बिना हाले भूले वैसे ही पड़ी रही। इनको क्या खबर थी कि नाना यों ही भूंठ मूंठ का भोग लगा कर दूध को आप ही पी जाया करते थे। सीधे साधे बच्चे ने समझा कि मूर्ति दूध पीती होगी। उनको भी होड़ लगी पर जब उसने दूध न पीया। उनके नन्हे जी को बड़ा रंज हुआ। रोने लगे। प्रार्थना करने लगे। गिड़गिड़ाने लगे। हाथ जोड़े पर मूर्ति का दिल न पसीजा। घंटों गुजर गये। बालक को अपने खाने पीने तक की सुधि न रहीं। ठाकुरजी थे कि चुप ! नामदेव ने सिर पीटा। बहुत अच्छा अगर तुम दूध नहीं पीते हो तो मैं भी आज कुछ नहीं खाऊँगा। तुम्हारे ऊपर उपवास करूँगा। बेचारे घटे भर पड़े रहे पर ठाकुर जी को तनिक भी दया न आई !

नामदेव को लज्जा आई, समझे मैं बड़ा पापी हूं। ठाकुर जी नाना के हाथ का दूध पीते थे। आज नहीं पीते। अब मैं अपनी जान होम दूँगा। यह कह कर पास ही एक कटार पड़ा हुआ था उठाया और चाहा कि जोर से गला काट लें। उसी समय मूर्ति ने एक हाथ से उनका हाथ पकड़ लिया और दूसरे हाथ से कटोरा उठा कर गुट गुट दूध पीने लगे। सच है प्रेम का मार्ग जीवित ही मरने का मार्ग है। जब तक अपना जीवन है, इसका भाव है, मालिक के जीवन का भाग नहीं मिलता।

यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाँहि।
सीस काट पग तल धरे तब बैठे घर मांहि॥
प्रेम प्याला जो पीये शीश दक्षिणा देय।
लोभी शीश न दे सके नाम प्रेम का लेय॥
कबीर भट्टी प्रेम की बहुत जो बैठे आय।
शीश दें सो पीयेंगे ना नर पीया न जाय॥

प्रेम प्याला नाम का चाखत अधिक रसाल ।
कबीर पीना कठिन है मांगे शीष कलाल ॥
जोगी जंगम से बड़ा सन्यासी दरवेश ।
विना प्रेम पहुंचे नहीं दुर्लभ सतगुरु देश ॥
प्रेम न बाड़ी ऊपजै प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा राना जो रुचै शीष देइ लेजाय ॥

जव तक मनुष्य मृत्यु की राह से नहीं गुजरता मालिक का दर्शन नहीं मिलता। प्रेम में दुई नहीं हैं। या तो तुम ही रहो या मालिक को अपने में रहने दो, Live & Let live से वह मार्ग भिन्न है। एक मियान में दो तलवार नहीं रक्खी जातीं।

जब मैं था तब गुरु नहीं जब गुरु हैं मैं नाहिं ।
प्रेम गली अति सांकुरी तामें दो न समाँहि ॥
जब लग नाता देह का तब लग भक्ति न होय ।
शीश उतारे हाथ सों तब कुछ होय तो होय ॥

हाथ का कटार गले तक नहीं पहुंचा। दूध का कटोरा मुँह से लग गया। नामदेव मुस्कराये। भला, तुमको पहले क्या होगया था? जो मुझे इतना कष्ट दिया। मूर्ति मुस्कराती जाती थी और दूध पीती जाती थी। नामदेव सँभाल वैठे। देखा सब दूध पीये जा रहे हैं। मुख पर जोर से एक थप्पड़ रसीद किया। क्या तू सब पी जायगा। मेरे लिये न छोड़ेगा। मैं क्या प्रसाद पीऊँगा। मुझे नाना की होड़ लगी है।

धन्य है तेरी सादगी! वाह रे तेरा भोला पन! दुई नाम को भी नहीं। मैं वह हूं। वह मैं है! मूर्ति ने कटोरा हाथ से रख दिया। नाम देव ने दूध पीया और उसके गले में बाहें डाल कर वच्चों की तरह बात करने लगे। और खेल कूद में लग गये।

मैं तू हुआ तू मैं हुआ मैं तन हुआ तू जां हुआ ।
कोई फिर कैसे कहे तू और हैं मैं और हूँ ॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

दोनों घुल मिल कर खेल रहे हैं मीठी मीठी बातें होरही है दो पहर बीत गया। बारह बजे नानी दोड़ी आई। अरे नामदेव बेटा तुमको आज क्या होगया ? जो खाने पीने तक की सुध बिसार दी। चल रोटी खाले। नामदेव हँसते रहे। नानी ने बाल गोपाल की मूर्ति को उठा कर ताक में रक्खा। वह रोटी खाने चले गये।

अब यह रोज का मामूल होगया। नामदेव ठाकुर का भोग लगाते और वह गट गट दूध पी जाते और नामदेव को परसाद में पिलाते। दोनों में कभी हाथापाई भी हो जाती।

कई दिन के बाद नाना सफर से लौटा। उसका पहला सवाल यह था। क्यों बेटे ! ठाकुरजी को भोग लगाया था ? वह बोला तुम्हारा ठाकुर बड़ा हठीला है। दूध नहीं पीता था। दो घण्टे मैं रोता रहा। अन्त में जब मैंने अपना गला कटार से काटना चाहा तव उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और फिर नाना ! वह तो सबका सव दूध ही पीये जाता था। मुझसे न रहा गया। मैंने बच्चू के इस जोर से चट्टू लगाया कि याद होगी। तब जाकर कहीं परसाद दिया। नाना ! अब तो रोज मेरे साथ खेलते हैं और हठ नहीं करते। बच्चू को चांटे की बात याद है।

नाना सुन कर आश्चर्य में रह गया ! कहने लगा कल मुझको तो दिखा ! उसने कहा अच्छा।

प्रात: ही दोनों उठे स्नान ध्यान पूजा पाठ करने के बाद नामदेव ने भोग लगाया जब ठाकुरजी पीने लगे। उसने नानाजी को पुकारा नाना आओ देखो ? वह आया देखता क्या है कि सचमुच बालकृष्ण दूध पी रहे हैं। नमस्कार किया। और अपने भाग को सराह ने लगा कि जिसके कुल में नामदेव जैसा भक्त प्रगट हुआ।

नामदेव का जीवन साक्षात्कार का जीवन था। मालिक जिसको दर्शन देता है इसी प्रकार देता है। मरमिटो उसकी राह में उस समय तुमको उसका दर्शन नसीब होगा। उसका नाम ले लेकर

रोते रहो। सचाई से उसको याद करो। मजाल है वह दर्शन न दे।

> कबीर हँसना दूर कर, रोने से कर चित्त।
> बिन राये नहिं पाइये प्रेम प्यारा मित्त ॥
> हँस हँस कंथ न पांइयाँ जिन पाया तिन रोय।
> हँसी खुशी जो हरि मिलें, तो कौन दुहागिन होय।
> सुखिया सब संसार है खावे और सोवे।
> दुखिया दास कबीर है, जागे और रोवे ॥

जिनमें प्रेम और विरह नहीं वह नाहक मालिक का नाम लेते हैं, जैसे बिना दूरबीन कोई दूर के सितारों को नहीं देख सकता उसी प्रकार बिना प्रेम आँख के मालिक का दर्शन नहीं मिल सकता।

अस मानस मानस चक्षु चाही, भई छवि बुद्धि विमल अवगाही।

गुसाईं तुलसीदासजी ने भी अपनी मानस रामायण के विषय में इसी मानस, प्रेम की आंख दिव्यदृष्टि की शर्त लगाई है। जो सत्य है। कबीर साहब की बाणी है—

> जब लग मरने से डरे, तब लग प्रेमी नांह।
> बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लेउ मन मांहि ॥
> लौ लाग कल ना पड़े आप बिसर जन देह।
> अमृत पीवे आत्मा, गुरु से जुड़े सनेह ॥
> लागी लागी क्या करे, लागी बुरी बलाय।
> लागी सोई जानिये, जो बार पार हो जाय ॥
> लागी लागी क्या करे, लागी सोई सराह।
> लागी तब ही जानिये, जो उठे कराह कराह ॥
> जो तू पिया की प्यारनी, अपना करले री।
> कलह कल्पना मेंट कर, चरनों चित दे री ॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

शीश उतारि भूमि धरे ऊपर राखै पाँव ।
दास कबीरा यों कहे ऐसा होय तो आव ॥
प्रेम प्याला भर पीआ राच रहा गुरु ज्ञान ।
दिया नगाड़ा प्रेम का लाल खड़े मैदान ॥

यह मालिक के साक्षात्कार, दर्शन का सरल और सुगम पंथ है, अब तुम्हारा प्रश्न होगा क्या सचमुच मूर्ति बोल सकती है ? खा पी सकती है । न कभी ऐसा आंखों ने देखा न कानों से सुना ! क्या कोई किसी को इस प्रकार मालिक का दर्शन करा सकता है जैसा नामदेव ने अपने नाना को दिखाया था मैं तुम से सत्य कहता हूं कि ऐसा होता है और हो सकता है। मुद्दत हुई मुझको भी ऐसी बातों पर विश्वास नहीं था । अब गुरु की अपार दया से मैंने सार तत्व को समझ लिया और कृत्य-कृत्य होगया । मैंने तुम्हारे प्रश्न का उत्तर तो ऊपर दे दिया पर फिर भी और स्पष्ट करने के हेतु कुछ न कुछ और कहता हूं। जो कुछ मनुष्य देखता है दिखाता है वह केवल उसके विश्वास और ख्याल या विचार का परिणाम है। कृष्ण भगवान के वचन हैं "जो कोई मुझको जिस रूप में याद करता है मैं उसी रूप में उसको दर्शन देता हूं।" और तुम भी अगर चाहो तो चित्त की धार को स्थिर करके अपने अंतर में दर्शन कर सकते हो ।
गुसाँई तुलसीदासजी महाराज का बचन है—

जाकी रही भावना जैसी ।
प्रभु मूर्ति देखी तिन तैसी ॥

———

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मेरी अमरीका यात्रा

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज होशियारपुर

दिनांक १८ जुलाई १९७६

मैं इस वार अमरीका और इंगलैंड गया। अढ़ाई महीने के वाद वापिस आया हूं। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर! तू क्यों गया था? दोस्तो! मैं साधारण हिन्दू हूं। सात वर्ष की आयु से राम को मिलने निकला था। ये मेरे पुराने संस्कार थे। मौज हुजूर दाता दयालजी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उन्होंने मुझे राधास्वामी या सन्तमत दिया। उनकी बाँणियाँ पढ़ीं। उनमें लिखा हुआ है कि राम और कृष्ण काल के अवतार थे। वेदान्त और सूफी कालमत में हैं। हिन्दू, मुसलमान, जैन, बुद्ध, ईसाई इनमें से कोई भी आगे नहीं गया। इन वातों को पढ़कर मेरे दिल में बहुत दुख हुआ। मैं सोचता था कि मैं तो मालिक को मिलने निकला था यहाँ कहाँ फँस गया जहां मेरे पूर्वजों का खण्डन है। क्योंकि हुजूर दाता दयाल जी महाराज पर मेरा पूर्ण विश्वास था और उनको मैं छोड़ नहीं सकता था इसलिए उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को वता जाऊँगा। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को वदल जाना। उन्होंने मेरे नाम लिखा था —

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर लेजा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी है, निवल अवल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ।।

क्योंकि उन्होंने मेरे जिम्मे यह कर्तव्य लगाया हुआ था। इसलिए जब उनका चोला छूटा तो मैंने उनके नाम तार दी जिसका अर्थ यह है कि मैं सच्चे दिल से वायदा करता हूं कि मैं आपकी शिक्षा को अपनी शक्ति और योग्यता अनुसार सारे संसार में फैलाऊँगा शायद इसी कर्म के कारण में अमरीका और इंगलैंड गया। मैं वहाँ कैसे गया ? डाक्टर ईश्वरचन्द्र शर्मा (Dr. I. C. Sharma) राजस्थान यूनिवर्सिटी में फिलासोफी का प्रोफेसर था। फिलास्फी और संस्कृत का एम०ए० है और Ph. D. है। वेदों का जानने वाला है। उसके दिल में निर्वाण को प्राप्त करने का जज्बा था। १९५९ में उसके अन्तर एक रूप प्रकट हुआ और उससे कहा कि इस जीवन में तुमको निर्वाण मिल जायेगा। मगर उसको यह पता नहीं था कि यह रूप किसका है। १९६५ में मैं दिल्ली में सत्संग करा रहा था तो वह अचानक वहां आगया। उसने मुझे पहिचाना। सत्संग के बाद मेरे पास आया और कहा कि १९५९ में आपने मेरे अन्तर प्रकट होकर मुझे कहा था कि तुमको इसी जन्म में निर्वाण मिल जायेगा। मैं तो था नहीं। लेकिन उसका मुझ पर विश्वास बैठ गया। कहने लगा कि मैं गरीब आदमी हूं और तीन महीने के लिये अमरीका जा रहा हूं। मैंने एक नोट पर Luck to I. C. Sharma लिखकर उनको दे दिया। क्योंकि उसको मुझ पर विश्वास होगया था तो जब वह वहां भाषण देता तो उसके सामने मेरा रूप प्रकट हो जाता और लोगों से कहता कि दयाल फकीर मेरे सामने खड़ा है और जो वह मुझे आज्ञा देता है वही मैं तुम लोगों को कह रहा रहा हूं। इस कारण अमरीका के लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होने लग गया और उनको नाना प्रकार के चमत्कार दिखाने लग गया। इसीलिये उन लोगों ने १९७२ में भी मुझे बुलाया और मैं

वहां तीन सप्ताह रहा । अब फिर मुझे बुलाया और मैं वहां गया। मैंने २९ अप्रैल को हवाई जहाज पर चढ़ना था लेकिन किसी कारण वश न चढ़ सका और दिल्ली ठहरना पड़ा फिर ३ मई को दहली से अमरीका गया। मैंने दिल्ली में चार सत्संग दिये। वे छपेंगे। किताब का नाम शब्द योग होगा। यह मेरे जीवन का निचोड़ है।

अमरीका में मैंने बस, रेल, कार और हवाई जहाज द्वारा लगभग ३५ हजार मील का सफर किया। अमरीका के छः प्रान्तों में लगभग ३५ भाषण दिये। तीन सत्संगों में तो पन्दरह-पन्दरह सौ आदमियों के करीब लोग आये और बाकी सत्संगों में कम थे। मैं अमरीका में ४५ मिनट रेडियो पर और तीन बार २०-२० मिनट टैलीवीजन पर बोला। आप लोग मेरे दौरे के बारे में जानना चाहते हैं कि मैंने वहाँ क्या कहा। मैंने वहां यह कहा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न ही कोई और महात्मा जाता है। यह मैं क्यों कहता हूं ? यहां होशियारपुर में दो आदमी और दो स्त्रियें मर गईं उन्होंने मरते समय कहा कि बाबा चरनसिंह जी महाराज और बाबा फकीर आये हैं। राधास्वामी कहा और प्राण त्याग दिये। ऐसे ही ओमप्रकाश दर्जी ने मुझे बताया कि उसका बाप मर गया। रात को वह लाश के पास बैठा हुआ था। वह कहता है कि मुझे नींद आने लगी। मैंने क्या देखा कि आप आये और मेरे बाप को साथ लेकर आसमान की ओर चल दिये। आगे-आगे आप थे, और पीछे मेरा बाप था और उसके पिता के पीछे बाबा चरनसिंह था। कुछ दिनों बाद बाबा चरणसिंहजी यहां आगये। मैंने पत्र लिख कर भेजा कि मैं आपसे मिलना चाहता हूं। उन्होंने अपनी कार भेज दी। मैं उनके पास गया। बात चीत हुई। मैंने कहा कि यहां दो आदमी और दो स्त्रियां मरीं। मरते समय उन्होंने कहा कि बाबा चरणसिंहजी और बाबा फकीर हमको लेने आये हैं। मैं तो गया नही आप बताइये कि क्या आप गये थे ? उन्होंने कहा कि पण्डितजी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मैं नहीं जाता। मैंने कहा कि यहां आपने १॥ लाख संगत को लगाया हुआ है। जब आप नहीं जाते तो फिर आप लोगों को साफ साफ क्यों नहीं बताते और क्यों उनको अज्ञान में रखा हुआ है ? जब मैं जरा जोर से बोला तो उसका सेक्रेटरी झट अन्दर आया और कहने लगा कि पण्डितजी ! सच कहने का दस्तूर नहीं है। मनसूर ने सच कहा उसको सूली पर लटकाया गया। मैंने कहा कि अगर यही बात है तो मेरे गोली मारो (मैं कोट के बटन खोल कर खड़ा हो गया) लेकिन यह याद रखना कि यदि एक फकीर मर गया तो हजारों मेरे जैसे और फकीर पैदा हो जायेंगे। कुछ समय बाद संत कृपालसिंह जी यहाँ मानवता मन्दिर में मुझे मिलने के लिये आगये। हुजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज के फोटो के सामने बैठे हुए थे। मैंने कहा देखिये ! यह आपके गुरु महाराज की फोटो है और वह मेरे गुरु महाराज का Statue है। आप सच बताइये कि जब आपका रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है तो क्या आप उनके अन्तर जाते हैं और क्या आपको इन घटनाओं का पता होता है ? उन्होंने मुझे स्पष्ट शब्दों में कहा कि पण्डितजी ! मैं नहीं जाता और न ही मुझे किसी बात का पता होता है। भाई नन्दूसिंह जी महाराज ने भी मेरे सामने माना कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता क्योंकि उन्होंने मेरे सामने माना कि हम लोग किसी के अन्तर नहीं जाते। इसलिये मैंने अमरीका में बड़े उत्साह से कहा कि कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता। मैंने अमरीका में उन लोगों से कहा कि तुम लोग यह समझते हो कि तुमको तुम्हारे अन्तिम समय पर हजरत इसामसीह ले जायेगा या राधास्वामी मत वाले या कोई और लोग यह कहते हैं कि अन्त समय पर उनको गुरु ले जायेगा, यह धोखा है, फरेब है और इन गुरुओं ने अपने निजी मान प्रतिष्ठा और धन धान्य के लिए लोगों को अज्ञान में रखा है और गलत विचार दिया है। मेरा अपना अनुभव यह है कि लोग मरते हैं और

कहते हैं कि बाबाजी आये, कोई कहता है कि हवाई जहाज लाये, कोई कहता है कि पालकी लाये या घोड़ा लाये, लेकिन मैं तो कहीं जाता नहीं। इसलिये कहता हूं कि ऐ संसार वालो ! तुमको गुरुओ और पंथों ने सचाई न बता कर अज्ञान में रखा है और लूटा है। यहां भी यही कहता हूं और वाहर भी यही कहता हूं और यही मैंने अमरीका और इंगलैण्ड में कहा। जो जाता है वह है तुम्हारा विचार विश्वास और श्रद्धा।

क्योंकि मेरे जिम्मे जगत कल्याण का कर्तव्य है इसलिये मैंने इस भेद को खोला है। मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु। क्योंकि अब समय बदल गया है और सिवाय इस सच्चाई के खोलने के संसार का अज्ञान दूर करने का कोई उपाय मेरी समझ में नहीं आया इसलिये अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिये मैंने इस भेद को खोला है और दूसरे मेरे ग्रह ही ऐसे हैं। एक ज्योतिषि ने मुझे बताया कि आप ससार में कोई ऐसा काम करेंगे जो आज तक किसी ने नहीं किया और यह है भी ठीक। तीसरी बात यह है कि हुजूर दाता दयालजी महाराज ने मेरे बारे में बहुत कुछ लिखा है. उनका दिया हुआ संस्कार काम कर रहा है। मैं अमरीका गया। एक दिन शिकागो (अमरीका का नगर है) में डाक्टर I.C. Sharue का फिलासोफी पर योग सम्मेलन में भाषण था। मैं भी वहां गया और तीन घण्टे वहां ठहरा। बहुत से लोग मुझे वहां मिलने आये। उनमें एक आदमी वहां की यूनिवर्सिटी में पामिस्टरी का प्रौफैसर था। उसने मेरा हाथ देखा और कहा कि आपके हाथ में ऐसी लकीरें हैं जिनका प्रभाव यह है कि जिसको आशीर्वाद देंगे या जिसके सिर पर हाथ रख देंगे उसकी मनोकामनायें पूरी होनी चाहिये और यह जो आपके दायें बाजू पर तिल है यह सिद्ध करता है कि आप एक महा रुहानी आध्यत्मिक आदमी हैं।

संसार यह समझता है कि उनके अन्तर स्वप्न में या समाधि में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जो रूप प्रकट होता है वह बाहर से आता है लेकिन मे... अनुभव यह कहता है कि न राम बाहर से आकर किसी के अन... प्रकट होता है न कृष्ण प्रकट होता है, न हजरत मुहम्मद आता है, न कोई देवी देवता आता है, न हजरत ईसा मसीह आता है न हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज आते हैं और न बाबा फकीर आता है यह भ्रम और अज्ञान है। इसलिये मैंने इस भेद को खोला है। इस अज्ञान के कारण मानवजाति नाना प्रकार के धर्म में बट गई और इसका परिणाम यह निकला कि आपस में घृणा द्वेष पैदा हो गयी और धार्मिक पक्षपात आरम्भ होगया और एक दूसरे के सिर कट गये। क्यों ? हर एक धर्म पंथ और डेरे के पैरोकार यह समझते हैं कि हमरा इष्ट सच्चा है और दूसरों का सच्चा नहीं। इस भ्रम को दूर करने के लिये सन्त कबीर, गुरु नानक और राधास्वामी दयाल आये और उन्होंने कहा।

काल ने जगत अजब भरमाया मैं कासे करूँ बखान।

यह सारा मन का खेल है। मन ने जीवों को भरमाया हुआ है। मगर परिणाम यह हुआ कि कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब और राधास्वामी दयाल के पैरोकार उनकी शिक्षा को न समझ कर नाना प्रकार की गद्दियों में बट गये। कोई ब्यासिया बन गया, कोई आगरिया बन गया, कोई सावन आश्रमिया बन गया और कोई कोई बन गया। आपस में घृणा पैदा होगई और मुकद्दमेबाजी शुरू होगई। इस दशा को देख कर प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया और मैं अनामी धाम से इस फकीर के चोले में संसार को असलियत बताने के लिये आया हूं। मैं संसार को यह कहना चाहता हूं कि ऐ मानव ! कोई भी व्यक्ति अपने कर्म के फल से बच नहीं सकता। जैसी तेरी नीयत होगी वैसी तेरी मुराद होगी। भूल जाओ कि तुमने बाबे फकीर से या किसी और गुरु से नाम लिया हुआ है या तुम राम या कृष्ण के पुजारी हो और तुम अपने पाप कर्मों से बच जाओगे।

यही मैंने अमरीका और इंगलैंड में कहा। उन लोगों से मैंने यह भी कहा कि तुम यह कहते हो कि हजरत-ईसा-मसीह तुमको सतलोक ले जायेगा। लेकिन यह सोचो कि हजरत ईसा का अपना परिणाम क्या हुआ ? सूली पर चढ़ाया गया। हाथों में कील, पांव में कील और छाती में कील ठोक दिये गये। अब तुम सोचो कि जो स्वयं नहीं बच सकता वह तुमको कैसे सतलोक ले जायगा ? उस समय जब मैं हजरत-ईसा-मसीह के बारे में यह कहने ही लगा तो Dr.I.C Sharma ने मेरा पाँव दबाया कि आप ऐसा न कहें। लेकिन मैंने कहा कि मैं इस बात की परवाह नहीं करता जो सच्चाई मेरी समझ में आई है मैं उसको बयान करने का हक रखता हूं। मैंने उन लोगों से सवाल किया कि जो ईसा मसीह अपनी तकलीफ को दूर न कर सका वह तुम्हारी क्या मदद करेगा। मैं वह कहता हूं जो मैंने खुद समझा है। किसी की मरजी हो सुने, न मरजी हो न सुने। मेरे पास आये या न आये, मेरे साथ बात करे या न करे। मैं हूं सत-पुरुष और अवतार लेकर आया हूं। क्या कहने के लिये कि ऐ इन्सान ! जो करेगा उसका फल भोगना पड़ेगा। स्वामीजी ने कहा है।

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

गोसाँई तुलसीदासजी ने कहा है—

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो अस कीना तैसौ फल चाखा॥

एक और महात्मा ने लिखा है कि मालिक के सुमिरन करने से आदमी बाइज्जत और बादौलत हो जाता है और कोई दुश्मन उसका कुछ नहीं कर सकता। लेकिन देखने में यह आया है कि उस महात्मा के अपने ही परिवार के आदमियों ने उसका विरोध किया और उनको बदनाम किया, तो मानना पड़ता है कि या तो उन्होंने मालिक का सुमिरन नहीं किया और या उनको उनके कर्म का फल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मिला। और सुनो, अर्जुन ने श्रीकृष्ण के मुख से श्रीमद्भगवद गीता के १८ अध्याय सुने और श्रीमद्भागवद कहती है कि अर्जुन नर्क गया। इसलिये अगर अर्जुन श्रीकृष्णजी के मुख से पूरी गीता सुनने के बाद भी अपने कर्मानुसार नर्क में जाता है तो तुम लोग बेशक कोई ग्रन्थ पढ़ो, रामायण पढ़ो, या कुरान शरीफ पढ़ो या राधास्वामी मत की बाणी पढ़ो, तुम अपने कर्म के फल से बच नहीं सकते। जो कर्म किये हैं उनका फल जरूर भोगना पड़ेगा। बड़े २ सन्त और महात्माओं ने अपनी आखिरी उम्र में काफी तकलीफ उठाई। उनको भी अपने कर्म का फल भोगना पड़ा। इसलिये मैं यह कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान ! तू इस भरोसे पर मत रह कि तू रामायण पढ़ता है या भागवत का पाठ करता है या जपनी साहिब का पाठ करता है जो कर्म तुमने किये हैं या करोगे उनका फल अवश्य भोगना पड़ेगा। कबीर साहिब ने लिखा है कि—

कर्म गति टारे नाहिं टरे।

मुनि वशिष्ट से पण्डित ज्ञानी, सोध के लगन धरी
सीता हरण मरन दशरथ का, बन में विपत पड़ी ॥

यह सब क्या था, कर्म का फल।

"I have Come on this earth from infinity in the form of Fapir.

क्या कहने के लिए ? कि ऐ इन्सान, तू अपने कर्म और अमल को ठीक कर और इस भरोसे पर मत रह कि तू राम या कृष्ण का पुजारी है या तू कुरान शरीफ को पढ़ता हैं या तू सैयदों अथवा ब्राह्मणों की सन्तान है। जो तुम करोगे उसका फल हर हालत में तुमको भोगना पड़ेगा। हजूर दाता दयालजी महाराज ने मुझसे शिक्षा को बदल जाने का हुकम दिया है इसलिये मैं दुनियां की बदनामी सहता हुआ भी शिक्षा को बदल रहा हूं और जो कुछ मैं कह

रहा हूं यह बिलकुल ठीक है। दुनिया मेरी सचाई सुनने के लिये तैयार नहीं है। जिसकी मरजी हो मेरे पास आये या न आये, मेरी बात को सुने या न सुने, मैंने जो खुद अनुभव किया वह कहा। मैं जब देखता हूं कि मेरे दाता दयालजी महाराज मनोवल के इतने धनी ये Optimistic थे और उनकी धाम उजड़ गई तो फिर कैसे कहूं कि कर्म का फल भोगना नहीं पड़ता। उनको पिछली उमर में एक ज्योतिषी ने बताया था कि महाराज ! आपको राहू आगया है और वह नुकसान पहुंचायेगा तो राहू आया ? प्रारब्ध कर्म का फल।

मैं जो अमरीका कह कर आया हूं वही यहाँ कह रहा हूं और यही मेरा संसार की मानव जाती के लिये पैगाम है। अमरीका में मैंने कहा कि तुम लोग धनी होते हुए भी अशान्त हो। क्यों ? तुम लोग इसलिये अशान्त हो कि तुम लोग महा कामी हो। वहाँ Sex पर Control नहीं है। विषय विकार अधिक है। Divorce तलाक का रिवाज जोरों पर है। यह उन लोगों की अशान्ति का मूल कारण है। एक रात में एक मकान में सोया हुआ था। रात को मुझे पेशाव की हाजत हुई। जब मैंने पेशाब करने वाला बरतन उठाने के लिए चारपाई के नीचे हाथ फैलाया तो मेरा हाथ एक आदमी के शरीर पर पड़ा। मैंने फौरन बत्ती जलाई। देखा तो मेरी चारपाई के नीचे एक नौजवान लड़का पड़ा हुआ था। मैंने पूछा तू यहाँ क्यों लेटा है, यहाँ क्यों आया है और क्या कहना चाहता है। कहने लगा बाबा जी, पांच लड़कियाँ मुझे तंग करती हैं और मैं उनके साथ काम भोगने के लिए विवश हूं, मैं दुखी हूं और अशान्त हूं। एक दिन एक युवक और आया वह भी बहुत अशान्त था और Sex के कारण दुखी था। तो मैंने वहां क्या कहा और यहां क्या कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान ! तेरी अशान्ति का कारण वहुत हद तक तेरी सेहत की खराबी, तेरी तन्दुरुस्ती की कमी है और इस सेहत की खराबी और तन्दुरुस्ती की कमी का मूल कारण काम

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

अंग की ज्यादती है।

जहां काम तहां नाम नहीं, जहां नाम नहीं काम।
रवि रजनी दोउ ना मिलें, एक ठाम एक याम॥

यह मेरा अपना अनुभव है। कैसे? १३॥ वर्ष की आयु में मेरी शादी हुई ओर १५॥ वर्ष की आयु में गृहस्थ में फँस गया, सन १९०५ ईसवी में गृहस्थ में फंस गया, सन १९०५ ईसवी में नाम लिया और सन १९१९ ईसवी तक न मुझे प्रकाश आया न शब्द, मैं बहुत अशान्त रहा। रोया करता था कि मुझे राम मिल जाय और मेरे दुख दूर हो जायें। लेकिन भगवान मुझे मिलता कैसे, मैंने तो भगवास को खोया हुआ था। लेकिन मुझे इसका पता नहीं था। बसरे बगदाद गया, वहां तम्बूरा बजाता, अपने तवाजाद भजन गाता और बहुत रोता, पण्डित पुरुषोत्तमदास जी वहां मेरे साथ थे उन्होंने मेरी हालत देख कर हुजूर दाता दयालजी महाराज को लिखा कि महाराज फकीरचन्द आपके प्रेम में बहुत रोता है: हमको भी ऐसा प्रेम दीजिये। तो हुजूर दाता दयालजी महाराज ने पण्डित पुरुषोत्तम दास को जवाब दिया कि जिसके कर्म में रोना है वह रोबे तुम क्यों फकीरचन्द की नकल करना चाहते हो। इसलिये कहता हूं कि अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करो वरना रोना पड़ेगा। कोई रोक नहीं सकता। मेरा रोना कैसे बन्द हुआ। १२ साल मैं बसरे बगदाद में रहा वहाँ अकेला था और स्त्री से अलग था। वहां सुन्दरता बहुत है। इसलिये मैं शहर में नहीं जाता था। लेकिन वहां भजन किया करता था। मेरी ब्रह्मचर्य की जो कमी थी वह पूरी होगई और मेरा भजन बनने लग गया मैं हूं सन्तगुर वक्त लेकिन मुझे कोई सुरखाब का पर नहीं लग गया, मैं यह कहन चाहता हूं कि मेरी तालीम यह है कि मुझे मत्थे टेकने से या मुझे चढ़ावा देने से या मेरी तारीफ करने से तुम पार नहीं जाओगे मेरी बात को सुन कर, समझ कर और उस पर अमल करने

तुम्हारा बेड़ा पार होगा। एक तो मैंने अमरीका में यह कहा और दूसरी बात उनको यह कही कि तुम लोग मांस खाते हो, मास खाने वाला आदमी रूहानियत को हांसिल नहीं कर सकता। मुझे दुख है कि हमारे हिन्दोस्तानी भाई जो वहां रहते हैं वह कोई सन्त कृपाल-सिहजी का चेला है और कोई व्यास वालों का चेला है, वह दूसरा मांस खाना तो एक तरफ रहा बहुत से आदमी गौ का मांस खाते हैं और कहते हैं कि यह दूध देने वाली गाय नहीं है। जब आदमी के पास पैसा काफी हो जाता है तो वह अपने आपको और अपनी असलियत को भूल जाता है। मैं यह क्यों कहता हूं कि मांस खाने वाला रूहानियत को हाँसिल नहीं कर सकता, जब तक मन निर्मल नहीं हैं कोई आदमी मन के रूप को नहीं समझ सकता। न ही मन से निकल सकता है। मन का निर्मल होना अन्न पर निर्भर है। ऋषियों ने रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी खुराक की अलग अलग काफी व्याख्या की है। इस वास्ते परमार्थ चाहने वालों को शराब और मांस से परहेज करेना चाहिये। अमरीका में Dr. I.C. Sharma के दायरे में लग भग ८०० पुरुष स्त्रियां हैं जो मुझे मानते हैं। उनमें से लग भग ८० प्रतिशत लोग मांस नहीं खाते। आप माँस खाओ या न खाओ मगर मांस खाने से मन निर्मल नहीं होता और सुरत आगे नहीं जा सकती। जिस तरह हमारी सरकार ने सीग्रेट को डब्बी पर यह लिखवा दिया कि सिगरेट पीना सेहत के लिये हानिकारक है ऐसे ही इंगलैण्ड में भी यह कहा जाता है कि मांस खाना सेहत के लिए हानिकारक है।

मैंने वहां कहा कि अगर तुम परमार्थ चाहते हो तो पहले अपने आपको जानने की कोशिश करो कि तुम हो कौन ! यह मांस न खाना या Sex पर Contrl रखना तो जरूरी है हीं मगर साथ ही अगर कोई अपने आदि घर जाना चाहता है तो उसको यह जानना भी जरूरी है कि वह है कौन। जब तक कोई आदमी राम

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

या कृष्ण या किसी गुरु की पूजा करता रहेगा या वेदों की या कि और चीज की Research करता रहेगा वह मंजल पर नहीं पहुंच सकता । इसलिये पहले अपनी Research करो फिर मंजिल पर पहुंचोगे । मैं सहसदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न और भँवर गुफा की Research करता रहा । १२-१२ घण्टे अभ्यास किया । इसी खब्त में काफी समय लग गया मगर शान्ति न मिली । मैं तो राम की या भगवान की या गुरु की खोज करता था । ऐ सत्संगियो ! दया तो हुजूर दातादयालजी महाराज की है लेकिन आप लोगों का मैं बहुत आभारी हूं कि आप लोगों के अनुभवों के कारण मैं अपनी खोज करने के लिए विवश हुआ । कैसे, जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उनके काम करता है लेकिन में नहीं होता तो सोचने के लिए मजबूर होगया कि जब लोग अपने विश्वास से मेरे रूप को बना लेते हैं तो मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रकट होता है क्या यह मेरा अपना विश्वास नहीं है । इसलिये मैं मन को छोड़ कर आगे जाने के लिये और अपनी खोज करने के लिए विवश होगया । कल दिल्ली से K.C. Jain की चिट्ठी आई कि मैं तो यहां हूं और बाल बच्चे चण्डीगढ़ में हैं । मेरी लड़की वहां फैल होगई । मुझे पता लगा तो मैंने वहां कई आदमियों को लिखा कि लड़की के परचे निकलवा कर देखो । मुझे लड़की के फेल होने का बहुत दुख था क्योंकि लड़की बहुत लायक है । काफी पत्र लिखने के बाद भी वह काम न बना । आप अमरीका में थे । रात को आपको याद किय कि अगर अमरीका वाले आपके ज्यादा भक्त हैं तो हम भी क नहीं । आप उसी समय आगये और फरमाया कि क्यों घबराते हो स्कूल को एक प्रार्थना पत्र लिख दो और सब कुछ ठीक हो जायगा आप फिर चले गये । सोचा कि पत्र तो पहले भी कई लिख चुक हूं, कुछ सफलता नहीं मिली । लेकिन हुकम मानना जरूरी है तीसरे दिन प्रातः मैं दिल्ली से चला और एक बजे के लगभ

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

चण्डीगढ़ पहुंच गया। १५ मिनट के बाद मेरी लड़की स्कूल से आई और बाहर से ही खुशी के बारे जोर जोर से चिल्लाने लगी। मम्मी मम्मी मैं पास होगई हूं उसको मेरे आने का पता नहीं था। मैंने उसे बुलाया और कहा कि कैसे पास हुई। वह कहने लगी कि मैडम ने आज मुझे बुलाया और कहा कि तुम्हारे डैडी का पत्र आया और मैंने तुम्हारे परचे निकलवाये। परचे ठीक हैं और तुम पास हो। गलती है। मैडम ने मेरे सामने टीचर को बुला कर बहुत झाड़ डाली।

जब उसने मुझे लिखा तो मैं सोचने के लिये विवश हूं कि मैं तो गया नहीं। चार दिन का जीवन है। अगर सच्चाई ब्यान नहीं करूँगा तो दोषी हूं और जाऊँगा कहाँ। कर्म का फल भोगना पड़ेगा। एक और आदमी का पत्र आया। वह लिखता है कि मैं रात को किसी जरूरी काम के लिये जारहा था। अन्धेरा था आगे से एक आदमी आया और कहने लगा कि आगे मत जाओ। आगे बहुत खतरा है। मैं डर गया कि अब कहां जाऊँ। आपका फोटो मेरी जेब में था। मैंने दर्शन किये और प्रार्थना की कि मेरे जाने का कोई प्रबन्ध हो। इतने में एक बस आई और में उस पर सवार होकर वापिस आगया और खतरे से बच गया। अब आप सोचो कि मैं तो गया नहीं और नहीं मुझे किसी बात का पता है। वह आदमी यह समझता है कि बाबा जी ने उस आदमी के रूप में आकर मुझे चेताया कि आगे मत जाओ खतरा है इसलिये मैं उस खतरेसे बच गया। यह सब क्या है ? माया, Impression और Suggestions जो संस्कार दिमाग पर पड़े होते है वही शकलें बना कर सामने आते हैं। इसलिये आप लोगों के अनुभवों के कारण मैं मन को छोड़ने के लिए विवश हुआ। मन से आगे है, प्रकाश और शब्द। मैं जब प्रकाश को देखता हूं और शब्द को सुनता हूँ तो मैं उस चीज की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती

है, वह क्या है ? वह मैं हूं. तो अपनी खोज करने से मुझे यह मि कि मैं कौन हूं। अब अगर मैं यह कह दूं कि मैं ही सब कुछ हूं तो मुझमें शक्ति होनी चाहिये लेकिन मैं तो कुछ नहीं कर सकता। चलो मैं न सही दूसरे सन्त भी कुछ न कर सके, उन्होंने भी बहुत तकलीफ उठाई बहुत दुख उठाये और कुछ न कर सके। तो हम क्या हैं ? चेतन के एक बुलबुले परमतत्व की एक अंश। यह सब परम तत्त्व का खेल है। हम उसी से बनते हैं और उसीमें समा जाते हैं। मुझे क्या मिला ? शान्ति। लेकिन अपनी खोज के आधार पर कहता हुं कि मैं खुद नहीं बन गया। मैं चेतन का एक बुलबुला हूं और अपनी प्रकृति के अनुसार काम करता हूं। इसलिये कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान ! तू अपने आप को जान, तू चेतन का एक बुलबुला है और अपनी प्रकृति के अनुसार खेल खेलने के लिये विवश है, We are bound to play our part। खोज के बाद क्या मिला। खोज करते करते मन थक गया और शान्ति मिली।

क्रमशः

दशहरा पर दिल्ली में सतसंग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज का सतसग होगा एवं अन्य महात्मा जन भी पधारैंगे। प्रेमी जन समय पर पधार कर लाभ उठावें। परम दयालजी के दौरे का प्रोग्राम इस प्रकार है।

२४-९-७६ होशियारपुर से प्रस्थान
२५-९-७६ से २७-९-७६ तक सरसोंहेड़ी (सहारनपुर)
२८-९-७६ से ३०-९-७६ तक बिलारी (मुरादाबाद)
१-१०-७६ से ३-१०-७६ दहली
४-१०-७६ से ६-१०-७६ भीलवाड़ा
७-१०-७६ से ९-१०-७६ अलवर

१०-१०-७६ को दहली वापिस आकर ११-१०-७६ को होशियारपुर को प्रस्थान।

दिल्ली में सतसंग का स्थान—सालवान स्कूल पुराना राजेन्द्र नगर नई दिल्ली। खाने एवं ठहरने का इन्तजाम पिछले वर्षों की भाँति ही रहेगा।

विनीत
नन्दलाल उर्फ आनन्ददयाल

क्षमा याचना व निवेदन

हमारे पूज्य पिताजी के परलोक सिधार जाने के कारण हम ग्राहक बन्धुओं की सेवा समय से नही कर पाये क्योंकि हमें नया अंक निकालने के लिये सरकार की अनुमति नहीं मिल पाई थी अव अनुमति आगई है। हम पूरी कोशिश करेंगे कि ग्राहकों की सेवा समय से करते रहें। इसकी वजह से ग्राहकों को जो परेशानी उठानी पड़ी उसके लिए क्षमा चाहते हैं। साथ ही निवेदन करते हैं कि इस अंक के साथ 'मनुष्य बनो" का वर्ष पूरा हो रहा है अत: जिन भाइयों ने अपना पिछला वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है वह शीघ्र भेजदें। अन्य था हम आगे उनकी सेवा करने में असमर्थ होंगे।

प्रकाशक

महर्षि शिवब्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

सम्पूर्ण महारामायण	१०)
श्री मद्भगवद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
नानक योग ३ भाग	४)
राधास्वामी योग ६ भाग	८)
[illegible]र योग प्रथम भाग	२)५०
,, द्वितीय भाग	२)७५
,, तृतीय भाग	१)७५
कबीर आत्म ज्ञान प्रकाश	३)
शरणागति योग	)७५
[illegible]सना योग	१)
[illegible]र्म रहस्य	१)
[illegible]नन्द योग प्रकाश	२)५०
Light on Anand yog	३)
पंथ संदेश	३)
सहज भक्ति	१)
आत्मिक प्रायमर	१)
दयाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

शाही भूत	१)५०
शाही डाकू	३)७५
शाही लकड़हारा सजिल्द	४)६२
शाही भिखारी	३)५०
शाही जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)[illegible]
ताबदार मोती	२)५०
झलकदार मोती	३)
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)७५
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)५०
हिंसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर	
सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५०
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तक तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं: 1725

श्री Chilwar Narasimlu. Book Sel
via P.O. Banswara
Distt - Nizamabad. A

व्यवस्थापक व प्रकाशक—
सुधा मीतल

सम्पादक
प्रभुदयाल मीतल
लेखराज नगर,
अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh